आरती कुंज बिहारी की

|| आरती ||

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

गले में बैजंती माला, बजावे मुरली मधुर बाला।

श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला।

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।

लतन में ठाढ़े बनमाली

भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक

ललित छवि श्याम प्यारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

कनकमय में मोर मुकुट बिलसैं, देवता दर्शन को तरसे।

गगन से सुमन रासि बरसे

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग

अतुल रति गोप कुमारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

जहां ते प्रकट भई गंगा, सकल मन हरिणी श्री गंगा।

स्मरण ते होत मोह भंगा

बसी शिव सीस, जटा के बीच, हरे अध कीच

चरण छवि श्रीबनवारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू।

चहु दिसि गोपि ग्वाल धेनू

हंस मृदु मंद, चांदनी चंद, कलत भव फंद

टेर सुन दीन दुखारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।